

## दशलक्षण धर्म पूजन

(पं. दानतरायजी कृत)

(अनुष्टुप) स्थापना (संस्कृत)

उत्तमक्षान्तिकाद्यन्त-ब्रह्मचर्य-सुलक्षणम् ।

स्थापय दशधा धर्ममुत्तमं जिनभाषितम् ॥

(अडिल्ल) स्थापना (हिन्दी)

उत्तम क्षमा मारदव आरजव भाव हैं,

सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं ।

आकिंचन ब्रह्मचर्य धरम दश सार हैं,

चहुंगति-दुखतैं काढ़ि मुकति करतार हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(सोरठा)

हेमाचल की धार, मुनि-चित सम शीतल सुरभि ।

भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति  
दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा ।

भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा ।

अमल अखण्डित सार, तन्दुल चन्द्र समान शुभ ।

भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा ।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरध-लोकलों ।

भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाणविनाशनाय पुष्पं नि. स्वाहा ।

नेवज विविध निहार, उत्तम षट्-रस-संजुगत ।

भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा ।

बाति कपूर सुधार, दीपक-ज्योति सुहावनी ।  
 भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजों सदा ॥  
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा ।  
 अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता ।  
 भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजों सदा ॥  
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा ।  
 फल की जाति अपार, घान-नयन-मन-मोहने ।  
 भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजों सदा ॥  
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा ।  
 आठों दरब सँवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों ।  
 भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजों सदा ॥  
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

## अंग-अर्घ्य

(सोरठा)

पीड़ें दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करें ।  
 धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा ॥  
 उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह-भव जस, पर भव सुखदाई ।  
 गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहै अयानो ॥  
 कहि है अयानो वस्तु छिनै, बाँध मार बहुविधि करें ।  
 घर तैं निकारै तन विदारै, वैर जो न तहाँ धरै ॥  
 ते करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा ।  
 अति क्रोध-अगनि बुझाय प्राणी, साम्य-जल ले सीयरा ॥  
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमार्धमाङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।  
 मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत में ।  
 कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्राणी सदा ॥  
 उत्तम मार्दव गुन मन-माना, मान करन को कौन ठिकाना ।  
 बस्यो निगोद माहिं तैं आया, दमरी रूँकन भाग बिकाया ॥

रूँकन बिकाया भाग वशतैं, देव इक-इन्द्री भया ।  
 उत्तम मुआ चाण्डाल हूवा, भूप कीड़ों में गया ॥  
 जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा ।  
 करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावै उदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना बसै ।

सरल सुभावी होय, ताके घर बहु-सम्पदा ॥

उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी ।  
 मन में होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये ॥  
 करिये सरल तिहुँ जोग अपने देख निरमल आरसी ।  
 मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अँगार-सी ॥  
 नहिं लहै लछमी अधिक छल करि, करम-बन्ध विशेषता ।  
 भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-आर्जवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देह सों ।

शौच सदा निर्दोष, धरम बड़ो संसार में ॥

उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना ।  
 आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्राणी ॥  
 प्राणी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं ।  
 नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभावतैं ॥  
 ऊपर अमल मल भूयो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै ।  
 बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधू लहै ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कठिन वचन मति बोल, पर-निन्दा अरु झूठ तज ।

साँच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी ॥

उत्तम सत्य-बरत पालीजै, पर-विश्वासघात नहिं कीजै ।  
 साँचे-झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो ॥  
 पेखो तिहायत पुरुष साँचे को दरब सब दीजिये ।  
 मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा, साँच गुण लख लीजिये ॥

ऊँचे सिंहासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया ।  
वच झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसत्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्रिय मन वश करो ।

संजम-रतन सँभाल, विषय-चोर बहु फिरत हैं ॥

उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भव के भाजैं अघ तेरे ।

सुरग-नरक-पशुगति में नाहीं, आलस-हरन करन सुख ठाँ हीं ॥

ठांही पृथ्वी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो ।

सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो ॥

जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रूख्यो जग-कीच में ।

इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जम-मुख बीच में ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप चाहैं सुरराय, करम-शिखर को वज्र है ।

द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकतिसम ॥

उत्तम तप सब माहिं बखाना, करम-शैल को वज्र-समाना ।

बस्यो अनादि निगोद मँझारा, भू विकलत्रय पशु तन धारा ॥

धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता ।

श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता ॥

अति महा दुरलभ त्याग विषय-कषाय जो तप आदरैं ।

नर-भव अनूपम कनक घर पर, मणिमयी कलसा धरैं ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दान चार परकार, चार संघ को दीजिए ।

धन बिजुली उनहार, नर-भव लाहो लीजिए ॥

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा ।

निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान सँभारै ॥

दोनों सँभारै कूप-जल सम, दरब घर में परिनया ।

निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया ॥

धनि साध शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोध को ।  
बिन दान श्रावक साधु दोनों, लहैं नाहीं बोध को ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करैं मुनिराजजी ।

तिसना भाव उछेद, घटती जान घटाइए ॥

उत्तम आकिंचन गुण जानो, परिग्रह-चिन्ता दुख ही मानो ।  
फाँस तनक-सी तन में सालै, चाह लँगोटी की दुख भालै ॥  
भालै न समता सुख कभी नर, बिना मुनि-मुद्रा धरैं ।  
धनि नगन पर तन-नगन ठाड़े, सुर-असुर पायनि परैं ॥  
घर माहिं तिसना जो घटावे, रुचि नहीं संसार सौं ।  
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर-उपगार सौं ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमाकिंचन्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शील-बाढ़ नौ राख, ब्रह्म-भाव अन्तर लखो ।

करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नर-भव सदा ॥

उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानौ ।  
सहैं बान-वरषा बहु सूरे, टिकै न नैन-बान लखि कूरे ॥  
कूरे तिया के अशुचि तन में, काम-रोगी रति करैं ।  
बहु मृतक सड़हिं मसान माहीं, काग ज्यों चोंचैं भरैं ॥  
संसार में विष-बेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा ।  
‘द्यानत’ धरम दश पैड़ि चढ़ि कै, शिव-महल में पग धरा ।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

## समुच्चय जयमाला

(दोहा)

दश लच्छन वन्दौ सदा, मनवांछित फलदाय ।

कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय ॥

(चौपाई)

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर-बाहिर शत्रु न कोई।  
उत्तम मार्दव विनय प्रकासे, नाना भेद ज्ञान सब भासे॥  
उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुरगति त्यागि सुगति उपजावे।  
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, सन्तोषी गुण-रतन भण्डारी॥  
उत्तम सत्य-वचन मुख बोले, सो प्रानी संसार न डोले।  
उत्तम संजम पाले ज्ञाता, नर-भव सफल करै, ले साता॥  
उत्तम तप निरवांछित पाले, सो नर करम-शत्रु को टाले।  
उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई॥  
उत्तम आकिंचन व्रत धारे, परम समाधि दशा विसतारे।  
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावे, नर-सुर सहित मुक्ति-फल पावे॥  
ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति  
दशलक्षणधर्माय जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

करै करम की निरजरा, भव पीजरा विनाशि।  
अजर अमर पद को लहैं, 'द्यानत' सुख की राशि॥  
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् )

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है।  
कर ऊपर कर सुभग विराजै, आसन थिर ठहराया है॥टेक॥  
जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है।  
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा दृष्टि सुहाया है॥१॥  
कंचन वरन चले मन रंच न सुर-गिरि ज्यों थिर थाया है।  
जास पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नशाया है॥२॥  
शुध-उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है।  
श्यामलि अलकावलि सिर सोहे, मानो धुआँ उड़ाया है॥३॥  
जीवन-मरन अलाभ-लाभ जिन, सबको नाश बताया है।  
सुर नर नाग नमहि पद जाके, 'दौल' तास जस गाया है॥४॥